कथा सरिता

शिष्ट व्यवहार

एक दुकानदार को नौकर की सख्त जरूरत थी। उसने अपने मिलने-जुलने वालों से कह भी रखा था कि कोई पढ़ा-लिखा, ईमानदार आदमी मिल जाए तो मेरी दुकान के लिए बताना, क्योंकि मैं अकेला हूँ। जब कभी बाहर सामान लेने जाता हूँ या अन्य किसी काम से इधर-उधर जाता हूँ तो दुकान बंद करनी पड़ती है। ग्राहक और मौत का क्या ठिकाना? कब आए और लौट जाए?

कुछ दिनों बाद ही एक मित्र एक युवक को साथ लेकर उस दुकान पर पहुँचा। युवक परेशानियों का मारा हुआ था। तमाम रोजगार दफ्तरों में रजिस्ट्रेशन करा रखा था, पर कहीं नौकरी का नंबर ही नहीं आया। दुकान के मालिक ने उसकी योग्यता के संबंध में पूछा तो उसने पूरा विवरण बता दिया। ''ठीक है। अभी आप अपने घर जाइए। मैं सोचकर उत्तर दूँगा और आपके घर सूचना भिजवा दूँगा।'' मालिक ने कहा। युवक निराश होकर अपने घर की तरफ चलता बना।

मित्र ने दुकानदार से पूछा - ''भैया, आपको व्यापार के लिए एक व्यक्ति की सख्त जरूरत थी, इसलिए मैं उस युवक को आपके पास लाया था। मेरी दृष्टि में वह युवक परिश्रमी, ईमानदार और पढ़ा-लिखा है, पर आपने उसे टाल दिया।''

''भाईसाहब, मैं आपसे क्या कहूँ? उसमें एक कमी थी। मेरे प्रश्नों का उत्तर उसने दिया तो, पर श्रीमान्, महोदय जी और साहब जैसे शिष्टतासूचक शब्दों का कहीं प्रयोग नहीं किया। व्यापार की सारी सफलताएँ शिष्ट व्यवहार पर ही आधारित हैं। शिष्टता के अभाव में तो मेरा सारा व्यापार ही चौपट हो जाएगा।'' अनुभवी दुकानदार ने अपने मित्र को समझाया।

शांति की राह

धन कमाने की अंधी होड़ में हम भीतर का आनंद भुला देते हैं और भुला देते हैं भगवान की दी हुई वह अखंड क्षमता जो उसने इंसानों को दी है।

एक व्यापारी ने व्यापार में खूब धन कमाया। उसके पास आलीशान बंगला था, नौकर-चाकर थे और सुख-सुविधाओं के तमाम साधन थे लेकिन भाग्य की बात कि एक बार उसे व्यापार में इतना घाटा हुआ कि ये सब उससे छिन गया। एक-एक पैसे के लिए वह मोहताज हो गया। अत्यधिक परेशानी वाले इन्हीं दिनों में शहर में एक ख्याति प्राप्त संत आए। व्यापारी उनके पास अपनी समस्या लेकर गया। पूरी बात उनके सामने रखकर वह बोला - महाराज, मुझे कोई मार्ग बताइये जिससे मुझे शांति मिले।

संत ने पूछा - क्या तुम्हारा सब कुछ चला गया? व्यापारी को स्वीकृति में सिर हिलाते देख उन्होंने पुन: प्रश्न किया - यदि वह तुम्हारा था तो उसे तुम्हारे ही पास रहना चाहिए था। वह चला कैसे गया? व्यापारी निरुत्तर था। संत ने फिर पूछा - जन्म के समय तुम अपने साथ कितना धन लाए थे? व्यापारी बोला - महाराज जन्म के समय तो सब खाली हाथ आते हैं। यह सुनकर संत ने कहा - ठीक, अब यह बताओ कि मरते समय अपने साथ कितना ले जाना चाहते हो? वह बोला - मरते समय साथ कौन ले जाता है, जो मैं ले जाऊंगा? संत बोले - जब तुम खाली हाथ आए थे और खाली हाथ ही जाओगे तो फिर चिंता क्यों करते हो? व्यापारी ने कहा - जब तक मृत्यु नहीं आती तब तक मेरी और मेरे परिजनों की गुजर-बसर कैसे होगी? संत मुस्कुराए और बोले - देखो जो धन पर भरोसा करेगा, उसकी यही दशा होगी। तुम्हारे हाथ-पैर सही-सलामत हैं। उनसे काम लो। पुरुषार्थ सबसे बड़ा धन है। पुरुषार्थ करो और ईश्वर पर भरोसा रखो - यही शांति का एकमात्र रास्ता है। उनकी बात सुनकर व्यापारी की आँखें खुल गई। संत की बातों का अनुसरण कर उसने न केवल व्यापार में लाभ प्राप्त किया बल्कि वह अलौकिक शांति भी पा ली।

अच्छे का संग

जीवन में हमेशा चंदन जैसे संस्कारी व्यक्तियों का ही साथ करना चाहिए और कोयले के सदृश दुर्जनों से दूर रहना चाहिए।

एक विद्वान और सदाचारी सज्जन थे। शहर में सभी उनकी सज्जनता की मिसाल देते थे जबकि उनका बेटा विपरीत स्वभाव का था। वह गलत व्यक्तियों से मित्रता कर बैठा था जिनकी संगत में वह बिगड़ गया था। सज्जन ने अपने बेटे को कई बार समझाने की कोशिश की, लेकिन वह अपने मित्रों का साथ छोड़ने के लिए तैयार नहीं था। जब उन्हें लगा कि वे सभी तरह से अपने बेटे को समझा चुके हैं तभी उन्हें एक तरकीब सूझी। उन्होंने अपने बेटे को बुलाकर कहा – बेटा, मैंने तुम्हें अनेक प्रकार से शिक्षा दी है, लेकिन अब मैं तुमसे इस संबंध में कुछ नहीं कहूँगा। बस मेरा एक काम कर दो। बेटे ने पूछा - क्या करना है? तो सज्जन ने अपने बेटे को एक हाथ में चूल्हे में से कोयला लाने के लिए कहा और दूसरे हाथ में पूजाकक्ष से चंदन लाने के लिए कहा। बेटा एक हाथ में कोयला और दूसरे हाथ में चंदन लेकर आया। कुछ देर बाद सज्जन ने कहा - अब इन्हें इनके स्थान पर वापस रख आओ। बेटे ने वैसा ही किया। बेटे के जिस हाथ में कोयला था वह हाथ काला दिखाई दे रहा था और जिस हाथ में चंदन था उसमें से सुगंध आ रही थी। सज्जन ने अपने बेटे को दोनों हाथ दिखाते हुए समझाया - बेटे, एक बात याद रखना, अच्छे आदमियों का संग चंदन जैसा होता है। जब तक संग रहेगा, तब तक तो सुगंध मिलती ही है लेकिन संग छूटने के बाद भी अच्छे विचारों की सुगंध जिंदगी भर साथ रहती है। दुर्जनों का संग कोयले के समान होता है। जब तक हाथ में कोयला है तब तक तो हाथ काला दिखाई देता है लेकिन उसे छोड़ने के बाद भी उसकी कालिमा बनी रहती है। इसलिए जीवन में हमेशा चंदन जैसे संस्कारी व्यक्तियों का ही साथ करना और कोयले जैसे दुर्जनों से दूर रहना। बेटे ने इस सीख को अपने जीवन में उतार लिया।

भीतर भागो

एक जगह पर ज्ञानी सत्संग कर रहे थे। एकाएक जोरों से आँधी चली। छत के टीन तेजी से हिलने लगे। भक्त लोग सब भाग खड़े हुए। पक्के मकानों में आश्रय ले लिया। थोड़ी देर में आँधी शान्त हो गयी। वापस आकर देखा तो स्वामीजी वैसे ही बैठे हैं। भक्तों ने पूछा -''बाबाजी! इतनी आँधी चली, हम भाग गये। आप नहीं भागे?'' स्वामीजी ने जवाब दिया कि ''हम भी भागे। लेकिन तुम बाहर भागे लेकिन हम भीतर भागे।'' परमात्मा से जुड़कर ही हम स्व की सुरक्षा कर सकते हैं।

मेरठ। जे.पी.इंजीनियरिंग कालेज में वैल्यू एजुकेशन विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए ब्र.कु.रामनाथ। ध्यानपूर्वक सुनते हुए कालेज के छात्र।

फतेहगढ़। रामचरित मानस का आध्यात्मिक रहस्य स्पष्ट करने वाली ब्र.कु.उषा को सम्मानित करते हुए लायंस प्रेसीडेन्ट गुरबिन्दर सिंह। साथ हैं ब्र.कु.सुमन।

झालावाड़। पुलिस अधीक्षक डॉ.रवि एवं उनकी धर्मपत्नी को सेवाकेन्द्र पर पधारने पर ईश्वरीय संदेश देते हुए ब्र.कु.मीना तथा ब्र.कु.नेहा।

कानपुर (जरौली)। आयुध शैक्षणिक संस्थान में एसएमएल का कोर्स कराने के पश्चात ब्र.कु.अनिता, प्रिंसीपल , ब्र.कु.गीता, ब्र.कु.शशि तथा अन्य।

फर्रुखाबाद। विधायक महेश वर्मा को परमात्म संदेश देने के पश्चात ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.नीलू।

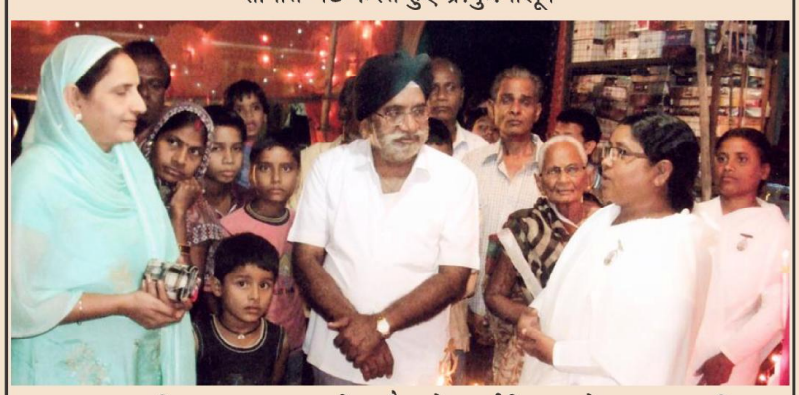

बसना। नगरपालिका अध्यक्ष परमजीत कौर को प्रदर्शनी समझाते हुए ब्र.कु.अहिल्या।